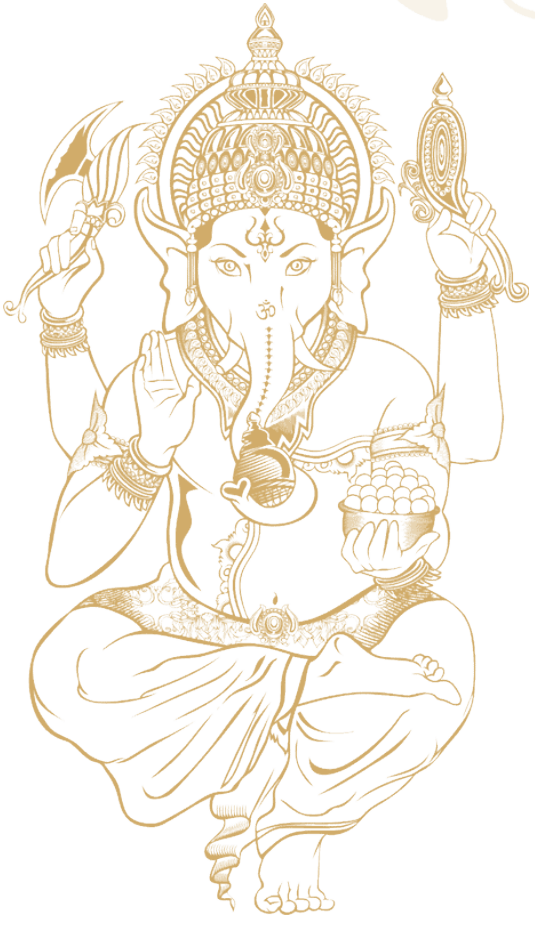

Mr.

27 Aug 2025

02:47 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119245701**

तिथि 27/08/2025 **समय** 02:47:00 **वार** बुधवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:59
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:03:43 घं
वेलान्तर	00:01:32 घं
सूर्योदय	05:41:18 घं
सूर्यास्त	18:31:10 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
तिथि	4
नक्षत्र	हस्त
योग	शुभ
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ठ-ठाकुर
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	बुध
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

चन्द्र 1वर्ष 4मा 1दि

चन्द्र

27/08/2025
28/12/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	27/08/2025
शुक्र	28/06/2026
सूर्य	28/12/2026

योगिनी

संकटा 1वर्ष 0मा 25दि

संकटा

27/08/2025
21/09/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	27/08/2025
सिद्धा	21/09/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:06:57	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	---	0:00			
सूर्य			09:39:41	सिंह	मघा	3	केतु	शनि	मूलत्रिकोण	1.56	पुत्र	पितृ	वध
चंद्र			21:33:01	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि	1.47	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			18:23:01	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	1.57	मातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			23:45:29	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	मंगल	शत्रु राशि	1.03	आत्मा	ज्ञाति	साधक
गुरु			22:43:00	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.24	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			07:12:20	कर्क	पुष्य	2	शनि	बुध	शत्रु राशि	1.03	ज्ञाति	कलत्र	प्रत्यारि
शनि	व		06:09:03	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.08	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु			24:07:23	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			24:07:23	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

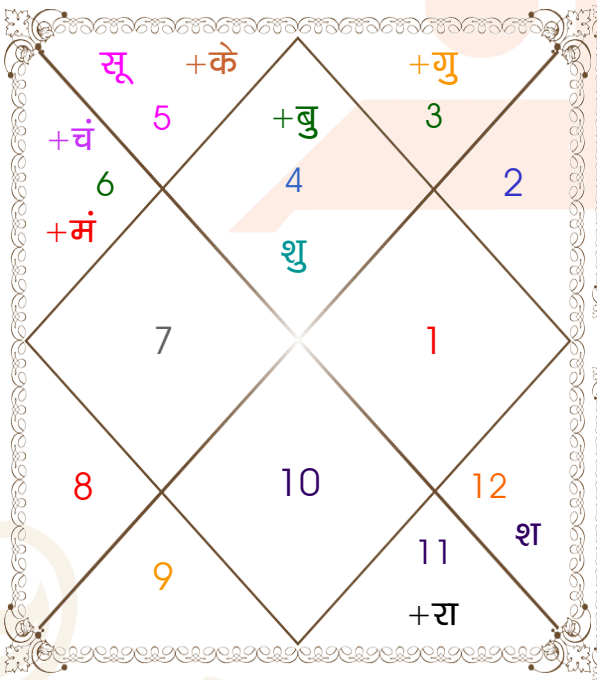

चन्द्र कुंडली

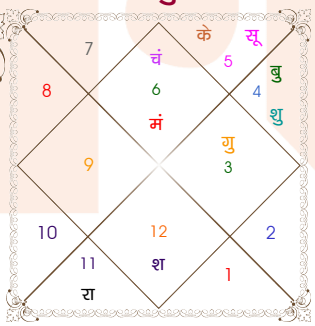

नवमांश कुंडली

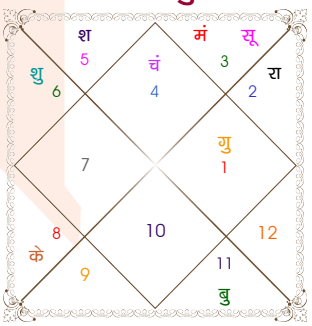

सर्वाष्टकवर्ग

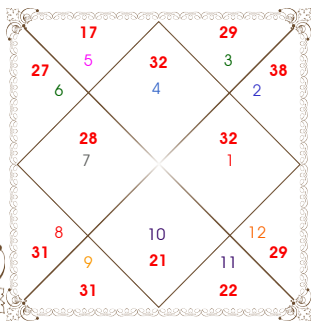

दशमांश कुंडली

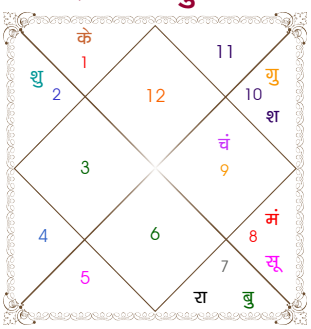

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आपका जन्म हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, गण देव, नाडी आद्य, योनि महिष तथा वर्ग श्वान होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का शुभारम्भ "ठ" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा- ठाकुर सिंह।

आपके मन में स्वाभाविक दानशीलता की प्रवृति सदैव विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप समयानुसार इस प्रवृति के पालन करने में तत्पर रहेंगे। आप में मनुष्यता के समस्त गुण विराजमान रहेंगे। पुत्रसंतति से भी आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होगी। आप समाज में खूब लोकप्रियता प्राप्त करेंगे तथा आपका यश दूर दूर तक फैला रहेगा। समाज में आप किसी भी प्रकार के भेदभाव को नहीं मानेंगे तथा सभी वर्गो के प्रति समान रूप से अपना व्यवहार रखेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं की आप हमेशा प्रयत्नपूर्वक पूजार्चना करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार की सम्पत्तियों का स्वयं के परिश्रम तथा बुद्धिबल से अर्जन करेंगे तथा हमेशा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।
प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राह्मणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पति से सदैव युक्त रहता है।

आप अपने जीवन काल में समस्त सांसारिक एवं भौतिक भोग्य पदार्थो का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे तथा दान पुण्यादि धार्मिक कार्यो को करने में भी निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में समाज में सम्मानार्जित करेंगे। साथ ही आपके मन में परोपकार की भावना का भी समावेश रहेगा तथा दूसरो के हित के कार्यों को करने के लिए आप हमेशा तन, मन, धन से तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान पुरूष भी होंगे तथा विपुल धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मो को करने वाला तथा धनवान होता है।

आपकी प्रवृति उत्साही होगी तथा उत्साह से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे एवं आपके समस्त सांसारिक कार्य कलाप उत्साह से ही सम्पन्न होंगे। आप के स्वभाव में लज्जा का भाव रहेगा तथा दुष्ट प्रवृति की ओर भी आप यदा कदा प्रेरित होंगे। एवं इसके साथ ही कभी कभी आप कठोरता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

उत्साही धृष्टः पानपोळघृणी तस्करो हस्ते।
बृहज्जातकम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

समयानुसार आप मिथ्याभाषण भी करेंगे तथा सज्जनता का प्रदर्शन भी कभी कभी करेंगे।इसके अतिरिक्त संबंधियो तथा बन्धु बाधवों से भी आप युक्त रहेंगे तथा इनसे सहायता आपको प्राप्त होती रहेंगी साथ ही समाज में महिला वर्ग के साथ भी आपके घनिष्ठ एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे।

असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।
हस्तो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।
मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

कन्या राशि में जन्म होने के कारण आपके हाथ लम्बे होंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक एवं दर्शनीय रहेंगा। आपका मुखमंडल, आंखे, कान, दान्त तथा अन्य शरीर के अंग भी सुन्दरता से युक्त रहेंगे। स्त्रीवर्ग के प्रति आपके मन में पूर्ण आकर्षण रहेगा तथा आप में श्रेष्ठ विद्वानों के गुण रहेंगे। धार्मिक संस्कारों के आचरण करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिसका आप अपने सम्भाषणों में उपयोग करके अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। सत्य का पालन करना आपका विशिष्ट कर्तव्य होंगा तथा शुद्धता का भी आप विशेष ध्यान रखेंगे। आप सभी कार्यों को शीघ्रता या चंचलता की अपेक्षा धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगे। समाज में सभी लोगों की भलाई के लिए किए गये कार्यों में आप पूर्ण रूचि लेंगे। तथा यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करेंगे। संसार के समस्त प्राणियों के प्रति आपके मन में दया की भावना विद्यमान रहेगी। आप का

जीवन सुख सौभाग्य से व्यतीत होगा तथा कन्यासंतति अधिक उत्पन्न होगी तथा पुत्र अल्प ही उत्पन्न होंगे।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप आलस्यमयी एवं लज्जाशील दृष्टि से युक्त होकर गमन करने वाले होंगे तथा बाहुभाग में शिथिलता रहेगी। आपका जीवन सर्वप्रकार से सुख सम्पन्न रहेगा। आपका शरीर दर्शनीय होगा तथा सत्यानुपालन को सर्वदा तत्पर रहेंगे। कलाओं में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा कई कलाओं में आप निपुण भी रहेंगे। साथ ही शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञानार्जन करने में सफल भी रहेंगे। आप घर से बाहर परदेश में भी निवास करेंगे।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः सस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप महिला वर्ग को अपनी हास्य एवं कौतूहल पूर्ण क्रियाओं एवं मुद्राओं से प्रसन्न करने में निपुण रहेंगे तथा ये भी आपसे हमेशा प्रसन्नानुभूति करेंगी। आपका व्यवहार सभी लोगों के साथ विनम्रता पूर्ण रहेगा। तथा अच्छे कार्यो को करने की ओर आपकी प्रवृति हमेशा जागृत रहेंगी। आपकी संततियां भी अधिक होगी। लेकिन आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली पुरूष होंगे तथा जीवन में अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भाग्यबल से ही सफलता प्राप्त करेंगे।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा अपने समस्त कार्यों को आप ईमानदारी से पूर्ण करेंगे। आपका आचरण भी उत्तम रहेगा फलतः समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। लेखन कार्य में आपको सफलता मिल सकेगी। आपका चित्त हमेशा शान्त रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन काल में यदा कदा आंखो की पीड़ा से आपको कष्टानुभूति होती रहेगी। साथ ही गुरूजनों के हित कार्यों की साधना में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।

आप विलासी प्रकृति से भी युक्त होंगे तथा विलासमय वस्तुओं का संग्रह करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। सज्जन पुरूषों से आप विशेष प्रभावित रहेंगे तथा उनका पूर्ण सम्मान करेंगे एवं ये लोग भी आपसे हमेशा खुश रहेंगे। अपनी दानशीलता की प्रवृति का प्रदर्शन आप आजीवन समयानुसार करते रहेंगे। आप समाज के सभी वर्गो में प्रिय एवं सम्मान्नीय होंगे। आप वैदिक धर्म के अनुयायी होंगे तथा नियम पूर्वक इसका अनुपालन करेंगे। संगीत एवं नृत्य आपके लिए मुख्याकर्षण रहेगा तथा इसके प्रति आपकी पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी। इसके साथ ही आप विदेश में भी निवास कर सकेंगे। साथ ही आप धार्मिक संस्थाओं में किसी उच्च पद की भी प्राप्ति करने में सफल होंगे।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपका सम्पूर्ण जीवन सुखैश्वर्य एवं वैभव से सुसम्पन्न होकर व्यतीत होगा तथा किसी भी भोग्यपदार्थ के अभाव की आपको अनुभूति नही होगी परन्तु काम भावना के प्रवलता के कारण आप समय समय पर व्याकुलता का आभास करेंगे। आपकी वाणी मधुर होगी तथा कई शास्त्रों के विषय में आपको तत्व ज्ञान रहेगा।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

देवगण में जन्म होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मृदु एवं उत्तम होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी अतः सरलता पूर्वक अपने विचारो को प्रकट करना तथा उसी प्रकार अन्य के विचारों को ग्रहण करना आपकी मुख्य विशेषता रहेगी। थोड़ी मात्रा में भोजन करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। दूसरे लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा क्रभी महान विद्वानों द्वारा प्रतिपादित किए गये सद्गुणों से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे। आपके जीवन में धनैश्वर्य की बहुलता रहेगी तथा इसका आप कभी भी अभाव अनुभूति नहीं करेंगे।

आपकी शारीरिक सुन्दरता देखने में अत्यन्ताकर्षक रहेगी तथा दानशीलता का भाव आपके मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप अत्यन्त सादगी पसन्द होगे तथा सांसारिक एवं भौतिकता के प्रभाव से हमेशा दूर ही रहेंगे। साथ ही आप एक महान विद्वान के रूप में भी समाज में प्रख्यात रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वादविवाद संबंधी क्षेत्रों में हमेशा विजय को प्राप्त करेंगे। साथ ही आप एक महान योद्धा के सुलक्षणों से युक्त रहेंगे तथा जीवन के समस्त कार्यों को साहस एवं वीरता के साथ पूर्ण करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था तथा विश्वास रहेगा परन्तु आपकी बुद्धि मन्द बुद्धि रहेगी तथा प्रकृति वायु प्रधान होगी।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभ्योग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाला होगा। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभ्योग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी सभी शुभकार्यो में त्याज्य रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो। मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभकार्य सिद्ध न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए। तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के नियमित रूप से उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग की दाल आदि प्रदार्थों को श्रद्धा पूर्वक किसी को दान करना चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी कमी होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के 8000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।